# समय का रास्ता

कुन्तल कुमार जैन

इच्छा

□

हरेक इच्छा

दूसरे की

प्रेमिका है

सन्मति प्रकाशन

बम्बई

समय का रास्ता
(कविता सग्रह)
कुन्तल कुमार जैन

सुन्दर जैन

Samay Ka Rasta
Poetry by Kuntal Kumar Jain

आवरण शिल्पी
कुन्तलकुमार जैन

प्रकाशक
सन्मति प्रकाशन
१३८ सी, सन्मति कुटीर,
बावडी चाल चन्दावाडी, सी पी टैंक,
बम्बई ४००००४

प्रथम सस्करण १९८६

मूल्य सजिल्द २५) रु०
पेपर बक १५) रु०

मुद्रक
बाबूलाल जैन, फागुल्ल,
महावीर प्रेस,
भेलूपुर, वाराणसी २२१०१०

## कविता

धीरे से धीरे सायकल
चलाना है
समय के रास्ते पर
और तमाम प्रकार की तेजी के खिलाफ
मोह भग की रचना है

## उनके लिये



यह औद्योगिक व्यवस्था
जिसमें राज्यसत्ता भी आ
जाती है, मनुष्य को ही नही
पूरी सृष्टि को निर्जीवता
में पलटने की, या मिट्टी में
मिलाने की बहुआयामी
सफल होती हुई
कोशिश है

इस व्यवस्था का सामना
जो लोग घर में या बाहर
यहाँ या वहाँ, देश मे या परदेश
में, या इस पृथ्वी के
किसी भी भाग में कर रहे है
एक डरे हुये आदमी की
ये कविताएँ
उनके लिए

कविता

समुद्र



---

## चिट्ठी पर ७४॥

[ यह सामान्य रीवाज है किसी पत्र पर ७४॥ की सख्या लिख देने पर
गाँव का या कुटुम्ब का या घर का भी कोई व्यक्ति उस पत्र को
बिना खोले उसे ही सुपुर्द करता ह जिसके नाम पत्र आया हो
हमारे यहा यह रीवाज समाज में ही नही घर में व्यक्ति की
स्वतन्त्रता की इज्जत करता ह । ]

अजु ! तुम्हारी चिट्ठी मिली तुमने लिफाफे पर लिखा था ७४॥
लेकिन इन लोगो ने मुझे लिफाफा खोलकर दिया है

ये वही लोग जिन्होने पहले अपने भाइयो को बेइज्जत किया
फिर उन पर नगापन रोप दिया

मैं सोचता हूँ ये लोग मनुष्य होने की भाषा भूल गये है
ये लोग अपने गाँववाले तो नही जो ७४॥ लिखने पर
चिटठी नही खोलते

तुमने लिखा बडी बेटी रोती रहती ह और छोटी अखबारो मे
पापा के छूटने को खबर ढूँढती है

तुमने क्यो पूछा ये लोग तुम्हे यातना तो नही देते
तो सुनो अजु !
यहाँ जेल का यह नियम ह कि राजी खुशी की खबर के सिवा
कोई बात बाहर नही जाने देते

तुम यह अच्छी तरह जानना कि इनके ऊपर जो व्यवस्था के लोग हैं
वे अपनी अराजकता के सिवाय किसी की अराजकता नही सह सकते हैं

खैर कुछ भी हो तुम डरना नही साहस को घटने देना नही
वैसे भी हो यह घडी अपने को जिंदा बचाये ले जाने की है

## समय का रास्ता

यह समय का रास्ता है जो सफलता नही
सत्य खोजकर लाता है,

जिसपर
हार कर भी हम जैसे लोग
अपनी सदी का अकेलापन

भोगते हुए
चलते हैं

यह अकेले पकेले
बिना साथ चलना,

बड़ी मँहगी मस्ती है स्वतन्त्रता है
अपने आपको खोजते रहना है

जिसके लिए

जान तक घिसनी पड़ती है
सामने आती हुई धार पर

सीधे समझो तो,
अपना वजन खोना है
फूल बनकर
हवा में उठना है उड़ना है बिखरना है बिछुड़ना है

और मिलना भी है मिट्टी में
इसका
आगे कोई उपयोग नहीं है

लेकिन
तुम यह बात नही मानोगे
और मनुष्य मनुष्य के बीच
पुल और मकसदा की
दलाली करोगे फिर
मकसदा में हुक्म बजाते रहोगे
अंधेरी रात है
और जुल्म के साए हैं
वही घाटी है
वही खाई है
वही दलदल है
लेकिन डर जाने जैसी
क्योंकि कोई बात नही है
लाखों बरस पुरानी यात्रा है मेरी भी
मैं ही
आता
रहा
हूँ,
बार-बार,
समय के बाहर से
समय में
दोस्तो !
जब भी तुम
मनुष्य की छाती पर
पहाड़
रखने आ जाओगे
तब
सामना
होगा और फिर होगा फिर होगा

## जब
## वक्त

मुझे मत दिखाओ, जेब में रख दो
अपना सफलता और यह सारा कीर्तिमान
वक्त, हमेशा साथ नही देता है
कभी कभी तो हजारो साथ देनेवालो को भी पीछे छोड देता है
और वहाँ से चलना शुरू कर देता है जहाँ से, एक अकेला आदमी
अपना सब लेकर चलता रहता है
भीड या जुलूस ही आखिरी निर्णय नही होता
सगठन ही अत तक काम नही आते है
क्योकि हथकडे भी, अत में जा कर तो टूट ही जाते है
हाथो में भले लगाम रह जाये
रथ
टूट
जाते है
और पहिये बिक जाते है
खरीदनेवालो के घमंड भी थोथे
और बेचनेवालो की विवशता भी झूठी हो जाती है
जब
वक्त
सफलता और चीजो को,
तोडने
मरोडने
लगता है

## जीभ

पहले होंठों से कहा गया
तुम
जीभ के कहने में मत आओ
बाद में
दाँतों ने
जीभ से कहा,
'तुम अपनी मर्यादा में रहो
अब हम ही तुम्हारे पहरेदार हैं
रक्षा भार
हम पर है
और देखो ! सेना हमारा शरीर है
अब हर चीज
पहले हम चख लेंगे
फिर मौसम अनुकूल होने पर
तुम्हें देंगे
बात नयी भी है
और पुरानी भी है
सिंहासनों से जुड़ी इसकी कहानी है
कि जीभ जब सच के
साथ हो जाती है
तो फिर वही जीभ कड़वा नीम हो जाती है
मुंडी पकड़ कर,
गला दबाकर
बाहर निकालकर

सरे आम
रास्ते पर
काट दी जाती है
या
दाँतो के पीछे
डाल दी जाती है
माना कि जीभ के पास
टी० वी० न सही,
रेडियो न सही
अखबार न सही
उसके
अपने लोकगीत तो हैं
कबीर के भजन तो हैं
और
असख्य दतकथाएँ तो हैं
वह कहेगी
और कहेगी
बिना कहे / बिना कहे
नही रहेगी

## बौद्धिक पत्थर



सब
भीगे बरसात में
पत्थर
सिर्फ
चमके
तुम्हारे शब्दो की तरह

## भोग की स्वतन्त्रता

लोकतन्त्र में, जैसी भी हूँ
अभी तो मैं हूँ
और
कहा तक हूँ, मैं नही जानती
कुछ लोग कहते ह
मै बडी पुरानी हूँ
मगर एक के बाद दूसरा खसम पलटती आयी हू
अब, किसी एक की नही
बहुत-बहुत लागो की प्रेयसी हू
किसी भी पैंचतारा होटल में सही
नगी
अधनगी
नाचने की
सावजनिक व्यवस्था हूँ

नाच मे
मैंने आपको देखा था और,
आंखो से पुकारा था
और
जब मैंन सबका आखे अपन खुले जिस्म से बद कर दी थी
और मैंने बठ हुए तमाम लागो को,
सपने दिये थे
एक नयी व्यवस्था क
लगातार नयी होती हुई अवस्था के

रात
एक के बजने बाद
ढल
रही
है
और घड़ी में नयी तारीख पड़ गयी है
मगर
एक और रात तो
ठीक ढंग से अभी आरम्भ हुई है
पीओ !
मेरी नग्नता की अध्यक्षता में पीओ
कहीं ऐसा न हो कि कल
मैं न रहूँ
और आप, लोगों से पूछते फिरें कि वह औरत
कहाँ
है ?
जो
जंघाओं में
तूफान लेकर
नाचती थी
और जिसकी देह का अपना वैभव था
मैं ! हाँ जी मैं !
खरीदी हुई ही नहीं, तुम्हारी स्वतन्त्रता हूँ
रोकना मत, अपने आपको कहीं से
वैभव तो अभी भरपूर है
मुझे जम के भोग लो   सूर्योदय अभी बहुत दूर है

## बलात्कार

मानवता
न्याय-व्यवस्था
ममता
और स्वत न्त्रता

एक ही औरत के चार नाम

कोई नितम्ब पर फेर रहा हाथ
कोई चूस रहा होठो को
कोई मसल रहा उरोजो को
और
कोई
घोडा बनकर दौड रहा
उस जगह
जहा से
मनुष्य को जन्म देने की सुविधा है

## स्वतन्त्रता के बाद

स्वतन्त्रता
के
बाद
मैं, लगातार ठिगना होकर, इस जगह, उस जगह,
हर जगह,
भँडुए की भूमिका में आ गया हूँ
अपनी दाहिनी हथेली में, रंडीपन और बायें हाथ में
ग्राहक लेकर
यह सच है
कि मेरे भीतर
गिर पड़ा है पेड़
और, जब मैं, समय के अलग-अलग खाना में,
बैठा
होता हूँ
तो मुझे लगता है
कभी मैं रंडी हूँ और कभी भँडुआ
और कभी ग्राहक
इस गणतन्त्र और सामाजिक मूल्यों को खूनी बस्ती में,
जहाँ,
सभ्यता, परम्परा और नैतिकता
एक और दुनिया द्वारा खरीदी जा चुकी है
वह दुनिया मेरी नहीं है

# तो

एक दिन
इस सृष्टि के सभी पवत, क्रोधित होकर, मनुष्यो पर अपने तमाम पत्थर फेंकने लगे तो ?

एक दिन
पथ्वी, अपनी क्षमा छोडकर, खुद ही अपनी धूल मुट्ठियो में भर भरकर निरतर फेंकने लगे तो ?

एक दिन
सारा वृक्ष समाज, फूल फल देने से इनकार करके, कोप से भरके चल [illegible] के, एक
एक मनुष्य को, अपनी डालियो के हाथ बना बनाकर मारने पीटने लगे तो ?

एक दिन
तीना अग्नि, अपनी अपनी तमाम लपटो के साथ मनुष्य का पीछा करने लगे तो ?

एक दिन
हवा, अपनी हल चलन छोडकर, पूरी मनुष्य जाति के भीतर आना और जाना छोड दे तो ?

एक दिन
घमड मे आकर, पानी अपनी करुणा छोडकर, भाप बनकर उड जाये या
मनुष्य के भीतर म रहना ही छोड दे तो ?

एक दिन
अनाज, सभा भरे, बहस करे, निर्णय करे और धरती में से उगना ही छोड़ दे तो ?
एक दिन
आकाश, तमतमाकर लौट जाये अपने घर, और मनुष्य को जगह देना ही छोड़ दे तो ?
एक दिन
समुद्र, अपनी अमत्स्य की सेना भेजकर मनुष्य को अपनी गर्भ जेल में रखने लगे तो ?
एक दिन
तमाम पशु और नभचर और कीड़े मकोड़े मनुष्य को कसाईखानों में भेजकर
रक्त उत्सव, रक्त स्नान या रक्तपान या विदेशी मुद्रा के लिए रक्त निर्यात करने लगें तो ?

शाम



थकना और घर लौटना,

## न्यायपूर्ण चेहरे !

अन्याय के, न्यायपूर्ण
चेहरे हैं
चुनाव,
है बहुत कठिन,
यहाँ जीना
अब आखिरी नरक है

और मानो मरने के बाद,
फिर जन्म होता हो
तो, समय का अनुभव
कितना बड़ा यातना शिविर है

देखो ! मेरी दुर्दशा देखो,
अपने ही निर्णय
खाली पड़े हैं मकानों-से
अपने ही हाथ
पराये हैं हाथों से
और अपने ही पैर
दूसरों की यात्राएँ
शर्तें
जीने की
जो निर्धारित करता है
वह मेरी स्वतंत्रता
तय करता है

मेरी दीवार-घडी
कैसे चले
यह पॉवरहाउस
तय करता है
मुझे हर रोज
अपनी घडी को
पद्रह मिनिट
आगे धकेलना पडता ह
अपना सर
नारियल की तरह
फोडना पडता ह—
जहाँ भी
फश है दीवार है घाट है या कोई भी पत्थर ह
यहा जीना
बेजायका ह
बरसा से
फूला का खिलना,
जैसे
अपराध है
बरसा से
इसीलिए
मेरी साँसा मे
दुगध ह
बरसो से

## रस्सी और आग

☐

सिगरेट की दूकान के पास
एक जलती रस्सी
रहती
है
आग भी, बदली जाती ह
लाग भी, बदलते जाते है

## सामना

सामना !
हरेक जुल्म का करना है
आहत ही आहत होते जाना है
राहत उनको,
कभी सम्भव नहीं जिनको लगातार चलना है
क्योंकि
अन्याय
नयी-नयी आकृतियाँ लेकर आते रहेंगे
यात्रा तो
अक्सर भंग होती है, फिर चलती है
जो लोग
थक जाते हैं
वे
बैठ
जाते
हैं
घने पेड़ की छाया में, या झाड़ी में या
किसी सुविधा में,
अपनी चीख
जिनके कानों और हृदय के बीच गूँज जाती है
वे लोग
निकल
पड़ते
हैं
और रास्ते निरन्तर रहते हैं उनके कदमों में,

काट भी दिए जाते हैं
पैरों से
लिपटे हुए
रास्ते
और अकेला ही चलना पड़ता है वर्षों-वर्षों तक

अँधेरा आता है और साथ में, जंगल चलता है
और पैरों को
ठोकरों की
शिकायत भी नहीं रहती
क्योंकि
यह जानना ही
बल देता रहता है
कि यात्रा लम्बी है, और बिना राहत चलना ही
चलना है
सामना।
हरेक जुल्म का करना है

## शोषण



कैसेट की टेप की तरह
कभी इस पहिये पर
कभी उस पहिये पर
बहुत बार
बजा
बिका
टूटा
फेंक दिया गया

## अधूरापन

जीवन दो हिस्सो मे किया, फिर आधा जिया
प्रेम भी आधा किया, नफरत को आध तक जिया
जो भी सच कहा, पहले उसका आधा किया
साहस था कम, झूठ भी आधे तक जिया
न्याय था थोडा दूर, लेकिन फासला आधा ही तय किया
पापी था नही पूरा मन, पुण्य को भी धोखा दिया
पूछो तो सही, प्यास थी, न बुझ पायी या हमने ही कम पानी पिया

## सब यहाँ तय है

चुप रहना !
सब यहाँ तय है
                    व्यवस्था में हैं
            आग,
            रखी हुई पानी में है
यह तपला भर पानी
पिओ,
या माथ पर उँडेल दो
या अपना सड़ा हुआ
अंग धो लो
यह अंतिम स्थिति है

साहब !
चीजें
सब ठीक ढंग से रखी हुई हैं,
उन्हें उलटने की हिम्मत
                    मत करो
            साहस,
            शवयात्राओं में
यहाँ बदल दिये जाते हैं
काल कोठरी में
रखा हुआ है पूरा इतिहास
तुम पढ़ सकते हो,

समझौतो के आपसी सम्बन्धो को

धीरे धीरे

सब बदल जाता है

कोशिश करके देखो,

क्रोध,

क्षमा में लौट जाता है

तपते रेगिस्तान में,

चलते-चलते

तुम थक जाओगे,

पानी के लिए

तरस जाओगे

अपने पास

ऊँट रखलोगे

तो भी

धोखा खा जाओगे

कुन्तल

□

जरा

सम्भल के र

समय

है,

एक आगबबूलेप

## हम
## जानते हैं

अगर जो नही पाये, तो जहर खा के मरेंगे   और जहर खाना, हमारा ही चुनाव होगा
किसी और का नही
हम जानते हैं, और अच्छी तरह जानते हैं   किस्से क्या हैं ? कहानियाँ  क्या हैं ?
दंतकथाओं के अभिप्राय क्या हैं ? हर जगह, और जगह-जगह, दखल क्या है ?
रास्तों की धमक क्या है ?
और हमारी गर्दन पर पड़ा हुआ हाथ [illegible] है ?

मत पूछो यारो !
दोस्ती क्या है ? दमन [illegible] है ?
और जनतंत्र में गोलीबारियाँ क्या हैं ? गिरफ्तारियाँ क्या हैं ?

# चरित्र

मैंने यह तय किया था
कि गरीब को और गरीब
और अमीर को और अमीर
नही होने दूंगा
लेकिन म
लोभी और बेईमान
दाना था
मुझे चार कमीजों से
काम चला लेना था
लेकिन मैं
बारह कमीजें
पहनने लगा
धड़ाधड़ पैंट
सिलवाने लगा
कुर्सी टेबुल, फ्रिज फर्नीचर
और एयरकंडीशनर से घिरने लगा
विज्ञापनों के जाल में फँसने लगा
मनुष्य का छोड़कर,
चीजों के लिए
लपलपाने लगा
मैं अपनी जेब
पूँजीपति की तिजोरी में
उलटने लगा

मैं
जिस गरीब की बात कर रहा था
वह हर जगह नगा अधनगा,
भूखा मरने लगा
मैं, आगे बढने लगा
उसकी वस्त्रहीनता की
चर्चा
कपडे पहने लोगो मे करने लगा

थोडा-सा मालदार होने
के बाद,

मैं, बडी-बडी कम्पनियो के
जूते खरीदने लगा
मेरे घर के बाहर का मोची
जो बडे प्रेम मे
नाप लेकर,
मेरे जूते बना देता था
उसका लडका
अपना धधा छोडकर,
नौकरी करने लगा

अब मेरे पैरो का
नाप नही रहा
मैं सात या आठ नम्बर का
जूता होने लगा

मैं
ज्यो ज्यो बेईमान
होता गया
अधिक से अधिक
बराबरी और न्याय की
बातें करने लगा

मैं फिर आकर्षित हुआ
रिफाइण्ड तेल के
सफेद रंग से और
घाणी के तेल से
नाराज हो गया
तेली और मेरे बीच का
पुल
दस पन्द्रह साल पहले
टूट
गया

मेरी सरकार बड़ी मस्त थी
गजब की नखरे नतकी थी
उसने विकास और
भलाई के नाम पर,
फिर समाजवाद के नाम पर,
टक्सो की एक महान दुनिया
रचा,
और जमकर शोषण किया
लोगो को आपस में
अलग-अलग किया
इतना ही नही
नोटो का प्रवाह
बसबी
किया

पैसे
और आदमी,
दोनों को
छोटा
किया
और चीजो को ज्यादा से ज्यादा
मँहगा और ऊँचा
हो जाने दिया

## और आगे

कोई भी सफलता तुम्हे बेचती जायेगी, जसे जसे जाओगे आगे, और आगे
कुआ या खाई, वे पूछेंगे जसे ही जाओगे आगे आगे और आगे
रेशम के धागे मे, गाँठ बना बनाकर तुम्ही ही डाले जाओगे
जब भी तुम जाओगे व्यवस्था मे आगे, और और, और आगे

## न कोई

न कोई रास्ता
न कोई मोड,

रह गया खुद से ही
गुणा भाग जोड,

हर जगह जख्म पर
धर दिये फूल

## इधर कभी आना मत

अमरता की सजा, हमें कभी देना मत
हो सके, तो इतना समझना
हम, हुये ही नहीं
अपने ही रक्त में उठ उठ कर
खड़े हुये, दौड़े, बहे, टूटे भी
मगर अपने लिये
दूसरे की भलाई की बात ही उठाना मत
सिर्फ एक अरसे तक, हाँ अरसे तक
समय की नदी में रहे, बहे और
बिखर गये रेत में
नदी होने का नाम हमें मत देना
जलते थे, शाम से आधी आधी रात तक
कभी-कभी पूरी पूरी रात भर
घरों में, तहखानों में, झोपड़िया मे
खंडहरों में, श्मशानों में या धूआँ मे
प्रकाश-स्तम्भ होने का दम्भ हमें देना मत
और सुन
जा अपने रस्ते जा
अपने ही घरों, में बिना घर रहने वाला को
या अपने को भी सर नहीं झुकाने वालों को
किसी भी व्यवस्था में रखने की
बात ही उठाना मत बात ही उठाना मत

## लोग सरल हैं

एकता खोजने वाले हैं लोग
और सर पर, सस्था, समाज, सगठन या सम्प्रदाय का टोकरा
उठा लाते हैं
एक होने के नाम पर धीरे धीरे खो दिया जाता है विवेक
कुछ खेल चलते हैं
और कुछ लोग, अपने अहकार मजबूत करते है
सस्था, समाज, सगठन या सम्प्रदाय आहिस्ते-से, लोगो के
मालिक बन जाते हैं
इसे हमेशा एकता के हाथ मजबूत करना कहा जाता है और व्यक्ति का दिमाग
सफाई से धो दिया जाता ह विचार करने की छूट और समय न मिले, इसलिए निरन्तर रेडीमेड आईडिया
पहनाये जाते हैं

लोग सरल ह नही जान पाते अहकारियो के नकाबपोश इरादे और फँस जाते हैं दलदल मे
बचना इनसे बचना ये सगठन, ये समाज, य सस्था, ये सम्प्रदाय मनुष्य को अपनी सदस्यता के
सिवा कुछ नही दते सदस्यता जो आदमी को बाधती है नियम निर्धारित करती है
स्वतत्रता को पीछे धकेल देती है
और,
सदस्यो की आपाधापी मानवीय करुणा का गला घोट देती ह
फेंकती है भाईचारा भाड में,

## शब्दो में चीजो के कारखाने

बिना तुझे पूछे, बिना मुझे पूछे,
यह सभ्यता
घर घर में
चीजा का जगल
और धक्के दे रही है
ताकि
एक एक मनुष्य गिरता चला जाये,
आत्म-बल के शिखरा से
जुड जाये
आत्मक्षय स
और, दूसरे के भाव का सप
उसे डँस जाये
और यह सब
ऐसे हो रहा ह
जसे
धरती पर
मनुष्य का होना ही
चीजो को
खरीदने के लिए हो
अधिक उत्पादन !
अधिक विज्ञापन !
अधिक से अधिक लोगो का शोषण
और

विदेशी मुद्रा का आकर्षण
कहां जगह है यहां ?
समता के लिए
भाईचारे के लिए
स्वतन्त्रता के लिए
तेरे और मेरे बीच प्रेम करने के लिए
कितना मुश्किल हो गया है
अपनी कोख से,
जन्म लेना
तारीखें गिनना,
और अन्त में,
दिन बदल देना
क्योंकि
चीजों ने
शब्दों में भी
अपने अपने कारखाने,
डाल दिये हैं

## मूल्य



मूल्य,
जितने भी थे
दुह लिये गये

बछड़ों के लिये
सूखे
थन रह गये

## समय का ठहरना और बहना

रात तीन बजे हैं, प्लेटफार्म पर रोशनी भरी पड़ी है
तीन दस की ट्रेन धड़धड़ाती जाती है
झींगुरों की झीनी आवाजों में ठहरा सन्नाटा, झटपट खड़ा हुआ
और दौड़ गया जंगल के अन्तरकक्षों तक
और ज्यों ही ट्रेन गुजर गयी, उसी गति से लौटकर
उन्हीं उन्हीं आवाजों में फिर हो गया स्थिर हो गया
छोटा स्टेशन, क्षण में और थोड़ी सरक गयी है रात

# तालीमार

वहाँ एक चुप, उत्सव मना रहा था
बैठे हुए लोगो के चेहरो पर
जड़े हुए ताले थे
जिनकी चाबिया,
शहर के प्रसिद्ध तहखाने में
एक सेफ डिपोजिट वाल्ट में
बद थी
जहाँ रात होते ही हाथो में हंटर देकर बिजलियाँ
दौड़ा दी जाती

अब
जब वे बोलना चाह रहे होते, ताले का
खौफ, उन्हें डपट देता
और सोचना छीन लेता
थप्पड़ रसीदों के बाद
और चाबियाँ मुस्कुराहट से शुरू होकर
खिलखिलाहट में नाचते हुए लोटपोट हो जाती

सामने खड़े
भीतर के सन्नाटे वह खौफनाक
चुप आता
लोहे के बूट मारता हुआ
व डर जाते

और चेहरों में फिट किये टेपरिकॉर्डर बजाने
लग जाते
चीजें आर्केस्टा हो जाती लड़कियाँ गाती
लड़के छेड़खानी करते
बूढ़े पके बालों के बारे में बातें करने जुट जाते
जागते रहो कहकर खुद सो जाते
भय
कुडली बाधकर होकर भीतर की ओर मुड़ने लग जाता
वहा से, वापसी के बाद
अपने अपने घरों के दरवाजों पर खड़े होने के बाद
काल बेल दाबते या चाबियाँ घुमाते
अगूठे में खाई बन जाती
वे घुसते वक्त महसूस करते
एक
घुप्त गहराई
स्विच दबाने ही
पखे के तीनों हथियार
आत्मा के द्वारा
अपने को
ठेल देते
दिमाग मे
फिर होना रहता
एक रक्तपात
रक्तपात
रक्तपात
व
दोनों हथेलियाँ जुड़ाकर, भरता हुआ रक्त
पीने लगते
फिर अपने विरुद्ध एक जाँच कमेटी बिठाने
एक साफ सुथरे नतीजे पर पहुँचते
नतीजा का अखबार ले भागते
हम पीठ थपथपाई और आँख मार नीयत के साथ
व बहुमत के वजन ढोल के लिए स्वीकृत हो जाते

जहाँ
वही खौफनाक चुप
एक उत्सव मना रहा होता
उत्सव में
सार्वजनिक नहर से
सबका खून
वहाँ पहुँचता रहता

## आँगन पर छत



दरवाजा और खिड़कियों को

दीवारों में
बदला
जा रहा है

आँगन पर
छत,
लाई जा रही है

और
देखते देखते
आसमान
आँखों के आगे से

लिया जा रहा है

## दस्तावेज

इतिहास,
अगर ठीक ढग से लिखा गया
तो
यही लिखा जायेगा

[illegible] अकेले थे
और अपने आप को
सुविधाओं से घेरे थे

वे लोग
राजनीति का व्यापार करते थे

और हम लोग
साहित्य का
और एक दूसरे से ज्यादा
कमीने थे, हलकट थे

अगर वे लोग
अपनी हथेलियो मे थूकते
तो हम लोग

चाटते
कभी कभी आपस मे बाट लेते
इतिहास,

अगर ठीक से लिखा गया तो
यही लिखा और लिखा जायेगा

## ये वे लोग हैं

ये वे लोग हैं, जो जुल्म करनेवालो के साथ हैं
ये वे लोग हैं, जो जान लेनेवालो के साथ हैं
ये वे लोग हैं, जो अखबारो में, दूरदर्शन में, और आकाशवाणी में हैं
मंच पर हैं, सभाओ में हैं
कुत्तो की तरह दुम
हिलाते हैं और वामपन्थी भी बनते हैं

ये वे लोग हैं, जो रोटी के नाम पर स्वतन्त्रता
छीननेवालो की पैरवी करते हैं
ये वे लोग हैं जो भारतीय जनता को मूढ़ कहकर
सत्ताधारियो के साथ लगे हुए हैं
बाप रे बाप !
जो भी इनका चेहरा देख लेता है, उसे
एक ऐसा पाप लग जाता है कि छुडाये नही छूटता

ये वे लोग हैं, जो सत्ता से कहते हैं, कि जुल्म ढाने का काम
हमें सौंपो
जल्लाद बनने के हमे पैसे दो

दोस्तो !
यहाँ किसी का धर्म नही
ये वे लोग हैं, जो अपनी माँ को वेश्या कहने में भी
नही हिचकिचाते

ये ये लोग हैं, जो सच बोलनेवालों के लिए
गिरफ्तारियाँ लाते हैं
क्या ये लोग बुद्धिजीवी हैं
या कि रंडीखाने के दलाल ?

ये लोग, बन्दूक तानकर खड़े हो जानेवालों के साथ हैं
और निहत्थे आदमी को हिंसक कहते हैं

कभी, ऊँची एड़ियों के जूते पहनकर
तो कभी, कुर्सी पर खड़े,
क्या ये बौने लोग
जानवरों से भी कम कद के नहीं हैं ?

## यह क्या हुआ ?



सम्बन्धों में
एक एक
सम्बन्ध में
जहाँ प्रेम को
खड़े पग रहना था,
शोषण
खड़ा
हुआ
यह कैसा जीवन-दर्शन जिया
हम लोगों ने

जबकि
शोषण के विरुद्ध तो
पहले से
लड़ाई तय थी

तय थी न ?

## सुबह और शाम

[ दो कविताएँ ]

### सुबह

रात !

मनुष्य द्वारा बदशक्ल कर दी गयी इस पृथ्वी को

दूर से नमस्कार करके गयी

यह खबर बाद-सबा लेकर आ गई थी

पंछियो ने गाकर उत्सव मनाया

सुबह उतरी

पहले

लम्बी लम्बी

गर्दनवाले

मकान पर,

फिर वृक्षो

पर

अन्त में,

छोटे-छोटे

घरो पर

घर !

खिड़कियों की तरफ से खुलने लगे

फिर दरवाजो की ओर मुड़ गये

चाली के नल पर, लोग जाने लगे

दादा जी,
सबसे पहले नहाकर निकले
इतने में सरकारी दूध की बोतलें घर में घुसी—
लेटरबाक्स मे
गर्दन डालकर
अखबार कूदा घर मे
और नौकर
जैसे हो घर में घुसा
घरवाले टपाटप उठे, दातुन के लिए
बहुओ और बेटियो ने रेडियो ट्यून किया
तो भजन
सब कहकर भागे और समाचार आने लगे

अब
सुबह हटाई जा रही, फिर हटा दी गयी
इसके बाद,
तेज हुई धूप ने
घर में
जहाँ भी आना-जाना सम्भव था,
और अगर
कोई वर्जित
क्षेत्र था
तो वहाँ भी,
नया अध्यादेश निकालकर
कब्जा
पा लिया था

शाम
□
सड़कें।
सब
खड़ी
हुई
पाँवों में आकर.

## हमलावर

एक श्वास से दूसरे श्वास मे दौड दौडकर, पहले पावो पर
फिर उछलकर कधो पर हमला करती हैं यात्राएं

एक धुआं और एक गध, सुलगती चोजो को मुझे घेरकर
चलती रहती ह साथ साथ रोज, एक छत सरकती रहती है
जरा जरा नीचे और एडिया और पजे घिसता हुआ भर जाता हूं क्रोध से

सुबह उठते ही मरे हुये चूहे को याद, सरकती है धूप में
और बासो दूध की तरह, फट जाती ह इच्छाएँ और इच्छाएँ

दिन भर एक पीला सांप, मेरे चारा ओर डसता हुआ चलता रहता ह
बिल्कुल ठीक से होती घटनाएं, उलटने क लिए
और मैं, उस जहर के बारे मे सोचता हुआ लौटता हूँ घर

## सुविधा के बटन टाकते हुए

भय,
एक स्थापना है
जो साहस के विरुद्ध
बार-बार की जाती है
उसकी जंजीरों में
जकड़े हुए, कैदी हैं हम
स्वतन्त्रता की बातें बनाते हुए

तो इसी तरह सजा मिलती है
कायरता को
हर जगह दबते हुए, पीछे हटते हुए,
अपने लहू का उबाल पीते हुए,
अपने ईमान को
हर जगह कत्ल करते हुए

ढेर-सी तारीखें आ गिरती हैं
शरीर में पड़ती दरारों में,
और एक बीतते हुए मौसम से
दूसरे मौसम का पता पूछते हुए
हम कितने दयनीय हो जाते हैं
दयनीयता
कद
घटाती
जाती है
और हम कद्दहीन हो जाते हैं

कागज की पीठ पर
बैठकर
उड़ते हुए
शब्द आ जाते हैं
उन लोगों के,
जिन्होंने
जीवन को भरपूर जिया
जंजीरों को भी संगीत दिया

और हमने
कमीनों की तरह,
बस, अपने अपने कामों में
जी लिया

हर जगह
दबते हुए,
पीछे हटते हुए,
अपने लहू का उबाल
पीते हुए
अपने ईमान का
हर जगह
गला
काटते हुए

हम कहीं भी पाये जा
सकते हैं
दरजी की तरह
जल्दी-जल्दी
सच के होंठ सीते हुए
और तुरपे हुए काजों पर
सुविधा के बटन
टाँकते हुए

## पेड ही पेड दूर दूर तक हड्डियो के

पूरी जली सिगरट की राख सी
पोली, बोदी और टूटी हुई शाम
और रोज उनका सिलसिला
कहाँ था आराम ?
सभी इ तजार काटे थे
कोई आनेवाला नही था

चलनेवाले भी इतन कमनसीब थे
कि रास्ते
आहिस्ता आहिस्ता
चिपक गये पाँवो स
और फुटपाथ
लगातार ढोने रहे
चेहरा के जगल ही जगल

एक जोडो जूते,
जो हमने अपने पाँवो के लिए खरीदे थे
बहुतर चेहरे पीटत चले गये

ऐसा नही
कि कुछ भी नही हुआ
मगर लोग
घबरा गये

इसलिये
डर छुपाने का
एक तरह से, हस पडे
जीभ और होठ चिपकाये चिपकाये

इसी बीच
उन्होने चीजो का
व्याकरण
बदल दिया
उन्होने लोगो को चश्मे दिये
और मीलो लम्बे कोहर भी

अब रोज, रोज
हमें एक सपना आता ह
जिसमे सपन हुए देश हैं
जलते हुए श्मशान हैं

और,
मूल्या और नतिकता के घने जगल हैं,
जिसमें दर दर तक
आदमी की हड्डिया के
पड ही पेड उगे हैं

## कुछ लोग



कुछ लोग

धनुषबाणा में
बदल गये ह

और
बाकी तमाम
लोग,
—निशानो मे

## निकल जाओ सडे हुए दृश्य से

[इस कविता का मैं, अपने समय की जटिलताओं से घबराकर आधे रास्ते से तुम बन जाता है]

पी गया
    एक के बाद एक      और बोतलें चकित रहीं
                                        वर्षों तक

        एक ही अँधेरे की उजली शक्ल
        चूमता रहा
        विषकन्या के साथ
    एक ही बिस्तर पर सोता रहा
        एक के बाद एक रात

फिर दिन भर कलम से स्याही      अपने ऊपर फेंकता रहा
कोई   नहीं   था   आसपास
अकेला      होता      गया
नये      सम्बन्धों      के लालच में
                    हर   तरह   से   घूमता   रहा
                    फिर जूझता      रहा
                    किन्तु नकली थे      प्रश्न
                    धीरे धीरे सब हो गये निरुत्तर

कोई बहस नहीं थी, कोई तर्क नहीं था
न मैं था
न तुम

पत्थर पहाड बन गये
फिर जल्लाद और गर्दनें सिकुडकर
लटकती गयी
जमीन
देखती हुई
खोखली करके वस्तुएँ बाकायदा रख दी गयी
अपराधो के नकली पश्चाताप गढ लिये गये
तैनात कर दिये गये विशेषज्ञ
नये सिरे से इतिहास के गौरव पढाने के लिए

चुपचाप
होता रहा यज्ञ
और जल गये हाथ
मजा आ गया
रेल के पहियो और पटरियो की तरह
इस्तेमाल
किया गया देश
हिल-स्टेशनो पर
उतरने के लिए
और सनसनाती हुई गोली की तरह गुजरती रही रेल
मेरे पूरे जिस्म पर से

एक राहत इस तरह दी गयी कि सगीत इकट्ठा किया जाता रहा
महफिलो में कहकहो से
और रहबरो से
और रहजनो से
ताकि चीखो को पीछे फेंक, सुन सकें मिठास

तुम हड्डियो से हड्डियाँ बजाते रहे
पहले अँधेरे में
फिर उजाले मे
किन्तु कैदखानो में बेडिया हथकडियाँ बजती रहीं
और तुम्हारे चेहरे
धडाधड निचुडते गये

और गांधी की लंगोटी से, अपनी शर्म छिपाते छिपाते
भूखा देश
नंगा हो गया, सारी दुनिया के सामने

अब तुम एक काम करो
यह टाइपराइटर अपने सर पर दे मारो
अफसरों की हत्या कर दो
इधर से भी
उधर से भी
अपराधों से जो खुशी होती है हासिल करो
तुम उलटकर देखो
मुहावरे
क्या हैं ? उनके नीचे
रास्ते कहां हैं ?
और कहां हैं
सुरंग ?

या
धंसाये रहो अपने दोनों हाथों को
जमीन में
फिर देख लेना
एक पेड़ तुम्हारी पीठ पर
जरूर
उग आयेगा
और
तुम खाद बन जाओगे
धीरे धीरे दफन हो जाओगे
भागो
इस जगह से
ताक पर
रख दो
अपना भविष्य,
और निकल जाओ मरे हुए देश में

तर्क

□

एक ऊँट-यात्रा, रेगिस्तान की ओर

## अपने लिए दो कविताएँ

(१) पेड कथा

पतझर का आना, और पत्तिया का वृक्ष से बिछुड बिछुड जाना
भगाकर ले जाती हवा को दौड दौड कर पकड नही पाना
खुद अपने पैरो में कीले ठोक ठोक कर खडे खडे देखते रहना
एक किश्त में जीना दूसरी किश्त में मर मर जाना
यह था पेड कथा में अपने कह कह कर आजमाना

(२) पहाड के पीछे

अपने को आग लगाना, फिर फूंक मार मार कर बुझाना
किसी पहाड के पीछे घाटी मे कूद जाना या समुद्र में डूब डूब जाना
इसे कहते हैं हरेक दिन का खत्म हो जाना
दिनो की आत्महत्या के इस लम्बे सिलसिले को सूर्यास्त कहकर
फिर अपने को बचा लेना, दूसरे सूर्योदय के लिये

# लिफ्ट से उतरते हुए

तेजी से सड़क पर दौड़ते आते हुए एक चक्के के नीचे
जोड़—बाकी
करते
हुए
मेरे तमाम दिन रात

पीछा करता हुआ सभ्यता की हड्डियो का खटपटिया ससार
और बाद में,
चुपके से
मेरे चारा ओर लिपटकर वद हो जाते बिना दरवाजेवाले घर

एक लिफ्ट से
उतरते हुए
लोग
सुरगो में,
सुरगो के मुडे हुए मुँह लम्बी चौडी खोदी हुई खाई में
अब दिखता ह
भयावह खुलने हुए एक भाग से
लुढककर, आती हुई चट्टानें
अन्त मे आग की बरसात

शहर वद आदमी वद सचाई के सिये हुए होठ और खुलकर
चीजा के पीछे दौड लगा लगा कर लोहे के डडे से खोपडी फोडता
हुआ
पुलिस-तत्र

नये खुले बाजारों में
बिकाई शुरू होने के इंतजार में
सुरगवादियों के चेहरों के पिछवाड़े लगातार
भागम भाग
आँख फाड़कर देखा गया
बहुत-कुछ अजीब हुआ
तमाम लोग
एक लिफ्ट से
पहुँचा दिये गये क्रांतियों के शहरों में

अब दोनों ओर लाइन लगाये हुए हैं दर्शक
चाबी मारकर दौड़ाई जा रही है क्रान्ति
हिलाती है हाथ,
और गिरते हैं
अभिवादन

## समय
## यथा-स्थिति में

☐

क्या
अब
दिनों में, रातों में
समय
नहीं
रहा ?

जो
बदल
देता
यथा-स्थिति को

## चुनाव का घोषणा पत्र

हमें वोट दो, सविधान के अनुसार चुनो और अपनी छाती पर बठ जाने दो
तुम्हारी छाती पर बठ जाना और बठकर जमे रहना, हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
जोर मे सास लो, और छोडो ताकि तुम्हारे जिन्दा रहने का अहसास हमे जिंदा रख सके

वोट पर, हम कोई चोट नहा सह सकते, तुम्हारे वोट लिये बिना रह नही सकते
वोट न देना, गोलियो से बिंधना है

डरो, हमसे डरो, भीतर तक डरो, और चुपचाप बिलकुल चुपचाप मतदान करो

इतना ही नही, हमारी लोकतान्त्रिक तानाशाही और हमारी वाह वाही मे मरो
अपनी स्वतन्त्रता की बाजी लगाओ, फिर जसे चाहो अपनी रक्षा करो

## आलोचक और कुत्ते ही कुत्ते

मूल्यों से खुजलाये कुत्ते
पत्थरों की तेज मार से
अपनी दाहिनी टाँग तुड़वाकर
एक तरक्की पसन्द आलोचक के घर में घुस गये,
उस ऊँचे आलोचक के कई यारों ने
उन्हें जीभ से चाटा, इलाज करवाया
लेकिन कुत्ते
चौपाये साबित नहीं हो सके
तो पट्टे उतार लिए गये
और उन्हें म्युनिसिपल्टी की गाड़ी को सौंपकर
जहर दिलवाकर उनकी हत्या करवा दी गयी
यह कथा दस बारह साल पुरानी है

अब कुत्तों की नयी नस्ल आयी देखकर
आलोचक और उसके यार फिर ललचाये
चार छह पालतू कुत्तों की खुजली का
नये मूल्यों के इंजेक्शन देकर     उन्हें फिर
मनुष्य की स्वतन्त्रता के विरुद्ध
भौंकने और अवसर पाते ही काटने के लिए
छोड़ा गया है आदमियों की बस्ती में
ताकि प्रतिमान साबित हो सकें
मनुष्य से बड़े
देखें
ये कुत्ते कहाँ तक काम आते हैं
और आलोचक मतलब सधने पर या बिगड़ने पर
उनकी कब हत्या करवाते हैं

## चुनाव का घोषणा पत्र

हमे वोट दो, सविधान के अनुसार चुनो और अपनी छाती पर बठ जाने दो
तुम्हारी छाती पर बैठ जाना और बैठकर जमे रहना, हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
जोर से सांस लो, और छोडो ताकि तुम्हारे जिन्दा रहने का अहसास हमे जिंदा रख सके

वोट पर, हम कोई चोट नही सह सकते, तुम्हारे वोट लिये विना रह नही सकते
वोट न देना, गोलियो से विंधना है

डरो, हमसे डरो, भीतर तक डरो, और चुपचाप बिल्कुल चुपचाप मतदान करो

इतना ही नही, हमारी लोकतान्त्रिक तानाशाही और हमारी वाह वाही मे मरो
अपनी स्वतन्त्रता की बाजी लगाओ, फिर जैसे चाहो अपनी रक्षा करो

## आलोचक और कुत्ते हो कुत्ते

मूल्यों से खुजलाये कुत्ते
पत्थरों की तेज मार से
अपनी दाहिनी टाँग तुड़वाकर
एक तरक्की पसन्द आलोचक के घर में घुस गये,
उस ऊँचे आलोचक के कई यारों ने
उन्हें जीभ से चाटा, इलाज करवाया
लेकिन कुत्ते
चौपाये साबित नहीं हो सके
तो पट्टे उतार लिए गये
और उन्हें म्युनिसिपैल्टी की गाड़ी को सौंपकर
ज़हर दिलवाकर उनकी हत्या करवा दी गयी
यह कथा दस बारह साल पुरानी है

अब कुत्तों की नयी नस्ल आयी देखकर
आलोचक और उसके यार फिर ललचाये
चार छह पालतू कुत्तों की खुजली का
नये मूल्यों के इंजेक्शन देकर उन्हें फिर
मनुष्य की स्वतन्त्रता के विरुद्ध
भौंकने और अवसर पाते ही काटने के लिए
छोड़ा गया है आदमियों की बस्ती में
ताकि प्रतिमान साबित हो सकें
मनुष्य से बड़े
देखें
ये कुत्ते कहाँ तक काम आते हैं
और आलोचक मतलब सधने पर या बिगड़ने पर
उनकी कैसे हत्या करवाते हैं

## हथेलियों में आग

हथेलियों पर जलाकर आग, मैंने अपना मुँह पोछा ह
पिछले दिनों में

वे कहते हैं
मुझे शर्मिन्दा होना चाहिये
लेकिन
मैं जंगली और ज़िद्दी दोनों था
वे
पूरे बन्दोबस्त के साथ
मुझे ले जाना चाहते थे
लेकिन मैं,
धुंध और धुए के जंगल की ओर भागती ट्रेन से,
कूद पड़ा
पत्थरों पर

मैंने आत्महत्या नहीं की, जैसा कि तुमने अखबारों में पढ़ा ह
यह झूठ, व्यवस्था ने गढ़ा ह
मेरे दुश्मन
इसे दुर्घटना कहते हैं
और कुछ मूर्ख
इसे सच मान कर
शोकसभा में
शामिल हो गये ह

## तथाकथित अहिंसकों से

बुद्ध हो कि महावीर हो, वे तुम्हारी तरह मनुष्य के सिवाय सब कुछ नही थे
वे मनुष्य को, किसी भी तरह की हथकड़ियाँ नही पहनाते थे
वे हत्यारा और पापियों को और ज्यादा प्रेम करने वाले लोग थे
मानवीयता
उनकी जेब में मुट्ठी भर रहम नही था जिसे वे तुम्हारी तरह बाटने का
दावा करते रहते
वे साहस से भरे हुए लोग थे जो निर्भय होकर गलकट्टों की बस्ती में रहते थे

## यहाँ

□

हरेक पाप है छुपकर किया हुआ गजब ये पुण्य का, खुलकर बिका हुआ

## हथेलियों में आग

हथेलियों पर जलाकर आग, मैंने अपना मुँह पोंछा है
पिछले दिनों में

वे कहते हैं
मुझे शरमिन्दा होना चाहिये
लेकिन
मैं जंगली और जिद्दी दोनों था
वे
पूरे बन्दोबस्त के साथ
मुझे [illegible] जाना चाहते थे
लेकिन मैं,
धुंध और धुएं के जंगल की ओर भागती ट्रेन से,
कूद पड़ा
पत्थरों पर
मैंने आत्महत्या नहीं की जैसा कि तुमने अखबारों में पढ़ा है
यह झूठ, व्यवस्था ने गढ़ा है

मेरे दुश्मन
इसे दुर्घटना कहते हैं
और कुछ मूर्ख
इसे सच मान कर
शोकसभा में
शामिल हो गये हैं

## तथाकथित अहिंसको से

बुद्ध हो कि महावीर हो, वे तुम्हारी तरह मनुष्य के सिवाय सब कुछ नही थे
वे मनुष्य को, किसी भी तरह की हथकडिया नही पहनाते थे
वे हत्यारा और पापियो को और ज्यादा प्रेम करने वाले लोग थे
मानवीयता
उनकी जेब में मुट्ठी भर रहम नही था जिसे वे तुम्हारी तरह बांटने का दावा करते रहते
वे साहस से भरे हुए लोग थे जो निर्भय होकर गलन्हो की बस्ती में रहते थे

## यहां

□

हरक पाप है छुपकर किया हुआ गजब ये पुण्य का, खुलकर बिका हुआ

## स्वाधीनता ? अड़तीसवें साल में

सतीस साल बीत गये
देश को,
अच्छी तरह बरबाद किया
पामाल किया
और करेंगे आगे भी
देश
क्या समझता था अपने आपको ?

देश को आज्ञा दी जाती है
कि जसा हम कहें
वसा
भेष, बदल बदल कर रहे
जैसे जैसे
हम चाहें
उस क्रम से
बरबाद होता चला जाये,
अधिक से अधिक समय म,
बरबाद होना ही
उसके लिए
काफी हद तक सुखी होना है

विरोधियो !
तुम्हें देश,

हमने
खाने को दिया था
और तुम भी देश को,
आपस में
एक : सरे से अधिक
खाना चाहते थे
मगर लड़ें, मगर, मरें
हम क्या करें ?

और देश
हमारी टेबुल पर
तुम्हें ही रख जाना पड़ा

देश, बीमार है
ऑपरेशन टेबुल पर है
और हम लोग लग गये है
बराबर,
अपने काम में

हम सतीस साल से
देश को बरबाद कर रहे हैं
अब कल से
अट्ठीसवें साल में
प्रवेश कर रहे है

## घर

□

मेरे घर के बाहर

उनका
पहरा
है

यह घर
किसका है ?

## परिवर्तन
## जडता की ओर

□

गाते हुए,
चीखें
गहरी
और
तेज
हो
गयी

और मैं
बहरा

मिश्रा
की
बधाइयाँ
और
ठहाके

फिर
कुर्सियाँ,
दो पंजो पर
खडे
कगारुआ सी
होती हुई

वक्त गुजर रहा है,

एक क्रूर
लय स
नाचता
हुआ

और
सम्बन्धो की
दुष्टता स

हरेक
दृश्य
पथरा
रहा है

याना
एक कब्र
भर चारो
ओर
फंद
बढा रही है
और
मैं
लाश
होता जा
रहा हूँ

## आपातकाल में चुप

छह सालो से

जब क्राति की बाते तेज थी, तुम्हारे मुँह म

तब मैंने कहा था

नपुसकता आ रही ह जीने मे

और यह बात, मैंने कोई प्रतिष्ठा के साथ नही कही थी

अपनी फजीहत करवायी थी

और जब अपने में भी कम ताक्त पायी थी, तो हिजडो की सहायता

मेरे काम आयी थी (और कविता प्रदशनी का उदघाटन हुआ उनके हाथो से)

तुम्हार ढग देखे थे

लक्षण देखे थे और मैंन कहा था कविता आत्मप्रचार है

दूसरा को ठगन का जरिया ह जसे विज्ञापन है तुम नही माने थे

क्याकि तुम साथकता बेचते रहते थे

मैंने यह कहा था और लिखकर भी दिया था

मैं डरा हुआ आदमी हू और मेरी कविता डरे हुए आदमी की कविता है

मने तो राज्य से यह छूट भी मागी थी कि वहादुरा को जसे राशन देते है आप
डरे हुए आदमी को आत्महत्या करने का परवाना दिया जाय
दोस्त, मुझे दु ख ह
तुम लोगा के साथ यह क्या हो गया ?
अब न किसी के पास बदूक की नली ह न वही पत्थर मारने की ललक ी है
अरे वहादुरो !
तुम्हारी बोलने की
उम्र तो अब आयी ह मौन से मौन में यह यात्रा क्या ह ? अपने को याद करता
तुम क्या चीज हो तुम्हारी सास न आम आदमी में ह, न ऊँचे तबके में,
तुम बीच के आदमी हो

म फिर कहता हूँ,
वही वही बात फिर कहता हूँ अब तो मान लो तुम भड़वे हो, जैसे मैं हूँ

३० जून १९७०

डर

□

डर
गुफाकाल की आदत

## छूट

बच नही पाओगे, दब के मर जाओगे, जल्दी से बद हो जाते
दरवाजा के
बीच
मले होते ही उतारकर, धो दिये जाओगे
रस्सियो पर सुखा दिय जाओगे
फिर मेज और गम लोहे के बीच सुला दिये जाओगे
घडे की तरह
एक दिन
गिर
जाओगे टुकडे टुकड हो जाओगे
जिसके सर पर रक्खे हुए थे
उसस ही बिछुड जाओगे

व्यवस्था स निर्धारित है रास्ते मोड और मील के पत्थर
अपने पैरो का तोडने
और कहाँ जाओगे ?
घाट पर, बँधी हुई नाव हो
हिलो-डुलो ठीक ह
लेकिन, अपनी मर्जी स
यात्रा पर निकल नही पाओगे
वैसे यहाँ घमड करने की पूरी छूट ह

# काले घर

दीवारो, खिडकियो और दरवाजा
के सायो को
हथेलियो में
एक चींटा,
मसल दिये जाने से भयभीत
दूर पहाडियो के पास
लाल जीभवाले श्मशानो मे
हर क्षण
एक के बाद एक
अग्नि-परीक्षा

अपने ही पेट में घुसे हुए
करोडो
हाथो की नैतिकता
एक दबाव डालती है
उजाले के भ्रम का

सारी बरसातें लौट गयी है
बादलो के अपने अपने जुलूसो के साथ

अब मेजो और कुर्सियो को
पास सरकाओ
और एक दूसरे का बताओ
बहस को

यहाँ से
आगे बढाया जाय समस्याओं के
काले
घरों में
तो उन्होंने कहा,
खामोश !
अपने भीतर के पहाड़ को
अन्दर से शहर की ओर
मत लुढकाओ
चाय की एक
प्याली, भीतर
फेंकते हुए,
इस बनते हुए प्रजातन्त्र में
स्वतन्त्र हो जाओ

## उस कथा का अन्त

☐

अब शिकार को

शिकारी
की दया
पर

छोड़ दिया
गया है

देवदत्त
और
सिद्धार्थ की
उस कथा का अन्त

पलट
दिया
गया है

## मतदाता का अधिकार

चूहे बिल्ली के अपराध खेल में
मुझ पर, और मेरे साथियों
पर बिल्ली होने का अपराध है
जबकि मैं उनके जबड़ों में अधमरा पड़ा हूँ

स्थापित स्वार्थों की मोटी और नंगी जांघों के बीच
पलते हुए बौने
दायित्व की खाल ओढ़े हुए खूनी,

उस दिन
हिजड़ों से डर गये और अपने नकली स्वाभिमान पर मर गये—
वह स्वाभिमान जो सुविधा की मोटी खाल से सजता है
वे गिनते हैं अपनी हथेलियों के बाल और खुश होते हैं
और देखते ही ब्लेड
चीखते हैं दायित्व
लेकिन दूसरे का

नया खून देने का लोभ देकर
वे एक सुई भोंकते हैं लम्बी बेहोशी की
और सिरिंज से
निकालते जाते हैं खून
और शोषण के विरुद्ध करते हैं मतदान

चूहे बिल्ली के इस अपराध खेल में मतदान,
जहाँ, ईमानदारियाँ रेप की जाती हैं

ताड
को
तरह
उगती ह
हार जीत,
जो पाँच वर्षों तक
हाथो मे बास लिये पीटती रहती है
इस भीड को, या उस भीड को, या दो भीडो से मिलाकर
तयार की गयी तीसरी भीड को
या
भीड म
खडे
भूखे नग, असहाय दश को
मैं
इन तमाम भाडो मे, बार बार पिटवाया गया
नागरिक हूँ
जिसे
एक निणय के साथ
अनागरिकता की ओर मुडना पडा है
म
यहाँ
सरेआम
चीखता हूँ
मरा मतदानिया अधिकार वापस ले लो

सलाह

☐

वे कहें,
वही टूथपेस्ट
इस्तेमाल कीजिये

## यह बुश्शर्ट पहन लो

देख लो ! आँख खोलकर देख लो
मेरी बुश्शर्ट में
ये जो लाल रग के धब्बे हं
ये मुझे क्रांतिकारी घोषित करते हैं

नोट
करो,
क्रांति, यहीं से शुरू होती ह
और ये जो सफेद रग के गोले हैं
मुझे ही, शान्ति स्थापना के लिए
महत्वपूण सिद्ध करते हं
और यह जो बाकी जगह काला रग ह
मुझसे ही आग्रह करता है
के सामने

और मास्टर !
यह जो तुम्हारे कमीज़ का रग है
मेरी बुश्शर्ट के एक कोने में पडा हुआ
पाया जाता है

क्यों बिताकर
चीजों से,
तुम्हें घेरने के षडयन्त्र में सफलता के बाद
देखा है मैंने कि,
तुम निहायत डरे हुए आदमी हो
और अब तुम
खुद मर रहे हो
अपनी ही चीजों की सुविधा से,
आकर्षण से,

५

पंक्ति में खड़े होने की सुविधा
चहती हैं, इसे
चीजों के पीछे दौड़ लगाओ
और जोर जोर से दौड़ो
गिर पड़ो
वहाँ जाकर
जहाँ मरते वक्त पानी माँगो तो,

देने वाला, कोई भी न बचा हो
सुनो।
एक ओर वरण की स्वतन्त्रता बाकी है
यह बुश्शर्ट पहन लो
यह बुश्शर्ट क्रान्तिकारी है
और इसे पहनने की आजादी है

## तख्ती

□

जहाँ पे न्याय की तख्ती
लगी है
वहीं पे
न्याय की हत्या हुई है

## सुइयो के नीचे

मैं, कहाँ से बात करूँ
या चुप रहूँ
दोनो स्थितियाँ, ठहरी हुई हैं
मुझे,
समाप्त हो गये हैं
आत्मप्रलापो पर,
या
बाहरी विवशताओ पर

मैं उदास हूँ
मरी हुई असम्बोधित तालियाँ
बजाते हुए
जिनमें
बठ जाते है
तमाम चुप
और
हवा पिट जाती ह

गहरे दु ख के साथ
नोट
कीजिए
कि तोड मरोडकर रखी गयी
बालिग आजादी को,
हथेली से

उतारकर
रख आया हूँ
च्हों द्वारा कुतर खाने के लिए
एक ऊब में से अपने को बाहर
फेंकने के लिए

फँस गयी
औरतों की तरह
पेट रह जाने के बाद
अब क्या किया जा सकता है !

दरअसल
दराजों में
फाइलों की तरह बन्द करके
रखा है
हमारा भविष्य
इस वक्त
कहीं पत्ता तक नहीं हिलता
हवाएँ
किसकी मुट्ठी में
बंद और बंद !

भीतर से सन्नाटा
घर से घबराया
और बाहर
अजनबीपन
सहता हुआ
सिगरेट के धुएँ-सा
खड़ा हूँ
एक खीज को सहलाता हुआ
सिलाई की मशीनें
जिनके हाथों में हैं
उन्होंने

कपड़े
धोना बन्द कर दिया है
और आदमी है,
लगातार
उठती गिरती
गिरती-उठती
मुद्रा के बीच

## हवा, आँधी, पेड़

जब हवा
आँधी बन जाये
और पेड़ उखड़कर गिरने के बजाय
आँधी
कह दे
यहाँ-वहाँ, जाकर
खड़े होने लगें
और फिर उसे
नयी जमीन की तलाश कहने लगें
तो
और की तो, मैं नहीं जानता
मुझे तो, हँसी आयेगी, और आयेगी ही
मैं तो इस पूरे दृश्य में
उस पेड़ को ही नमस्कार करूँगा
जिसने उखड़ जाना पसन्द किया, बजाय समझौते के
और साहस तथा
स्वेच्छा से,
वरण किया मृत्यु का
और उसे,
एक आन्तरिक उत्सव में
बदल दिया

## किताबी लोग

वे लोग, जिन्हें तुम खोजने निकले थे, नहीं मिले
भले ही किताबों में अक्सर लिखे हुए मिले
धक्के !
संचालित कर रहे हैं समय की सुइयों को
और धूप,
फूंक मारकर, निगल रही है चीजें

एक शवयात्रा !
जुलूसों को आगे बढ़ा रही है
और लोगों की उम्मीदों के पाँव, घिस गये हैं

एक विराट शोक सभा
तालियाँ
बजा
रही है
जय-जयकारों को, कन्धों पर बिठाकर, समाचार-पत्रों के दफ्तरों में
छोड़, छाड़ कर
लौट रही है
खामोशी !
सबके चेहरे पर नाच चुकी है
भले ही चेहरे बदलने की निरन्तरता रही हो
मक में
जो लोग यात्रा कर आये ह, कहते हैं
पाखण्ड, सच के पीछे छिपे मिले और पेट के खड्डे में
बैठे हुए लोग मिले'

## सजा

सजा देनेवाले उदार हो गये जल्लाद नहीं रहे
देखो ! हथकड़ियाँ
बेड़ियाँ पहनाकर ले जाया जा रहा हूँ
अपराध यह है कि व्यस्त नहीं रहा उनकी सीढ़ियाँ बनाने में

शब्दों की उंगलियों से निकलती है आग
शब्द हैं मेरे कड़वे, संगीतहीन और गाने के नशे में
धुत हैं लोग इसलिए मुँह बांधकर, तहखाने में उतारा जा रहा हूँ

सजा का दूसरा हिस्सा यह है कि इसके बाद ठूंस दिया जाऊँगा पागलों की जेल में
जाने से पहले, इस सदी की इस तरह प्रशंसा करता हूँ
कि भूख मारता हुआ आदमी है
और रची हुई दुर्घटनाएँ हैं

## पराये
## निर्णय

यही मेरी स्वतन्त्रता रही
कि आँखों के आड़े
　　　　कान किये
　　　　खड़ा रहा
जहाँ तहाँ
औंधी पड़ी
　　हुई चीजें
　　सीधी करने से
　　　　थरथराता रहा

चीख से लेकर खामोशी तक
फैली हुई भाषा में
　　　　जब मुझे
दोनों हाथ उठा उठा कर
खंडहर पुकार रहे थे
मैं चोर दरवाज़े से घुसकर
घर का मालिक बनकर
एक बेशर्मी के साथ
　　　　तीसरी जगह
निकलता रहा

अपने होते हुए भी, निर्णय
दूसरों के थे

मैं, जाल में फँसा हुआ
प्रशिक्षण में
　　　　चूहों की आदत
सीखकर,
　　　　खुद को
कुतर-कुतर कर
छोड़ देता रहा
लपलपाती जीभों के बीच,
यह बल प्रयोग
रोज़ करता रहा
स्वतन्त्रता
क्या चीज़ होती है
कभी महसूस नहीं
　　　　कर सका

दाव लगाने का
साहस ही नहीं था
　　　　इसलिए,
बहस में
जगह बना-बनाकर
सार्थकता के सवाल
उठाता रहा

क्योंकि प्रश्न पूछना
विदेशों से सीखकर
लौटा था

वैसे कुछ भी नहीं है
पास
न दौलत
न खूबसूरत औरतें
न कार, न बंगला
न कुत्ता, न बगीचा,
लेकिन
ओखली में सर देने से
कँपकपाता रहा
सिर्फ इसलिए कि कभी
इनसे मिलने की
सम्भावना न मर जाय

दोस्तो !

कोने में खड़े रहने का
एक निकम्मा अकेलापन
रखा मैंने
बजाय
साथ
होने के
मार खाती हुई भीड़ क
सच कहता हूँ कि
पराये निर्णयों के बोच
अपने इस बुने हुए
अँधेरे का
मोह भी कैसा है
कि जेब में
दियासलाई
रखने से
डरता
रहा

## विभाजन



मुझको
हरेक जगह
दूसरा
बन
जाना
पड़ा
एक ही घर को
कई कमरों में
बँट जाना
पड़ा

## प्रार्थना

अब,
लगता है, कि तुम्हें
पैसो की अधिकता
जल्दी-जल्दी
विवेक से बाहर
ले जायेगी

अहकार
मद चढ़ायेगा तुम्हें,
तुम्हारी यह अवस्था
साथ के प्रत्येक व्यक्ति को
अपने नियन्त्रण में लाने की
जबदस्त कोशिश करेगी

जो ऊष्मा
ऊष्मा भरे सम्बन्धो से
तुम्हें अलग थलग कर देगी
फिर
दम्भ के अलावा तुम्हें कुछ भी
अच्छा नही लगेगा

फोन पर
तुम्हारी आवाज
तुम्हें
फुला-फुला कर बोलेगी

तुम
सामान्य सत्यों को
और मानवीय मूल्यों को भी
दौलत के पागलपन में
भूल जाओगे

किसी कुत्ते की तरह
चलती हुई बलगाड़ी के नीचे
नीचे
चलोगे
यात्रा को अपने नाम लिख दोगे
और उसे चार अपने जसों में पढ़ोगे—
यह सब भूलकर कि,
गाड़ीवान का घर आयेगा,
बैल
विश्राम करेंगे
और दूसरे दिन
फिर हल या गाड़ी में जुत जायेंगे

म तो फिर
यही प्रार्थना कर सकता हूँ
तुम्हारी सफलता
अहकार-शून्य हो
और उन मानवीय मूल्यों
के लिए हो
जो तुम्हारी विवेक की
रक्षा करे,
सतत रक्षा करे

## शोकसभा



हरेक बार
तेरे साथ
मरा
रोज मेरी शोकसभा

दोनो का

उपयोग

□

जो, खबर की तरह, फैले हैं चारो ओर
उन्होंने यह फैलाव जांचने के पूव ही
व्यवस्था के शतनामे पर हस्ताक्षर कर दिये हैं
समथन में
या विरोध में

क्योंकि दोनों का चरित्र
अन्ततोगत्वा
एक जैसा हो जाता है, या कहो, है
यह सब हमने अनुभव से जाना है
आखो देखा है
किताबो का इससे
क्या
लेना-देना ह ?

जो,
व्यवस्था का इस्तेमाल तराजू की तरह करना जानते हैं
व लोग, दोनो का उपयोग जानते हैं

पलड़े
चाहे कितने ही गुर्राये एक दूसरे पर
लेकिन जब कम तौल की शिकायत बढ जाती है
तो लोग,
पलड़े बदल देते हैं
तराजू की व्यवस्था तो
वही की वही रहती है
वही की वही है

लेकिन पलड़ो के बाहर
अगर तुम कोई सृजन करने लगते हो
तो दोनो पलड़े
तुम्हें गाली देने लग जाते है
इधर पलड़े का हिस्सा बने लोग
कहने लग
जाते हैं,

तुम उधर के पलडे का हिस्सा बन गये हो

और उधर के पलडे का अग बने लोग,
भौंक उठते हैं
तुम इधर वालो के दलाल हो

खैर !
इससे तो
कुत्तो की उपस्थिति का ही
बोध होता है
ऐसे में कोई तो बतलाये
मनुष्य कहाँ चले गये ?
यहाँ से,
इस बस्ती से,
घर बार छोडकर

लेकिन ऐसो के बीच में ही
अकेला चलना सामर्थ्य है
आत्म निर्भरता है
मनुष्य होने का गौरव है, विवेक है

इसे,
इस पलडे का या उस पलडे का, हिस्सा बने लोग क्या जाने ?
अभी तो उन्होंने
शरीर ही मनुष्य का पाया है
मनुष्य की आत्मा पाने में
अभी बहुत दूरी और देरी है

चलो
हम उनर
अंधकार से निकलने की प्रतीक्षा करें
क्योंकि वे भी तो हमारे ही भाई हैं

## शौर्य

□

जब तुम डर नहीं रहे थे
वे लोग डरने लगे थे

## सोचना
## बार-बार

सोचना !
कभी-कभी सोचना !
खामोशी किस शक्ल में, मिल रही है बाजार में
घरबार में,
दरबार में,
सम्बन्धों के तार-तार में

रस्सियाँ !
पैरों के नीचे से दौड़ रही हैं घटनायें गिराने को
शोषण-सूत्र जमाने को
समय एक जगह रोक देने को
कील
बनाकर
एक जगह ठोक देने को
कहाँ है ?

एक देश
दूसरे देश के साथ
एक राज्य दूसरे राज्य के साथ,
एक हाथ, दूसरे हाथ के साथ
और तुम
मेरे साथ

आदमी के पीछे आदमी        मीलों लम्बी कतार
जिस्म और कपडे सभी
तार तार

सोचना !
कभी कभी सोचना !

## खोज

□

मैं नही मिलूँगा
कभी नही मिलूँगा
मुझे मत ढूँढना
इन लोगो में/        या उन लोगो में
जिन्होने खूँटों से बँधने        के लिये
लिखा

क्योंकि मैं किसी भी प्रकार के सृजनबाधक
पैंचलेदरा की बस्ती म
कभी नही रहा

## साजिश

गवाह
नही,
तो तयार कर लिए गये,
कर लिए जाते हैं
सजा !
घर में भी दी जाती हैं
और बाहर भी

इस तरह
कही भी नही छोडा गया
मनुष्य को
न इस व्यवस्था की कहो
न उस व्यवस्था की कहो
हरेक व्यवस्था में
मनुष्य का रक्त
पिया गया है
अ.र सत्ता को तो
'यह रक्त पिलाना'
नागरिको के कर्तव्य मे
शामिल कर लिया गया है
यहाँ तक कि
हाथो में पत्थर देकर
फूलो को भी

जगह-जगह
खड़ा
कर
दिया है

हाय, मेरे छोटे छोटे सच तक, मारे गये
जैसे मेरे बच्चे मारे गये हों
जिनके नीचे,
उनके मुँह
लगे हुए थे
फिर सत्य विजय की कहानियाँ
कही गयी,
और मेरी उम्र की स्याही
बना बनाकर
लिखी गयी

एक दिन
मुझे गहन अंधकार में
रखा गया
दूसरे दिन
तेज रोशनी से अंधा
किया गया
और हँसने को तो
भीतर से दाग दिया गया

वे लोग आते
व्यवस्था से ही आते
यहाँ तक कि
दोस्त बनकर भी आते हैं
सिर्फ एक जगह मेरी है
जहाँ देह से भी
अलग रहा जा
सकता है,

ये लोग, कभी वे लोग,
वे लोग, कभी ये लोग,
बनकर आते हैं
एक धनुष बन जाता है
दूसरा तीर बन जाता
तीसरा जब धनुष चलाता है
तब [illegible] उसके सामने सजाकर
खड़ा कर दिया जाता
यह शिकार घर
घर में भी किया जाता है
और बाहर भी क्योंकि उनकी उपस्थिति चप्पे चप्पे पर है

फिर इस हत्याकांड को
मुक्ति, विकास, प्रगति या कल्याण का
नाम दिया जाता है

कितना योजनाबद्ध है
सब कुछ
सब कुछ ही

सजा
घर में भी दी जाती है
और बाहर भी
और गवाह
तैयार
कर
लिये
जाते
हैं

चरित्रहीनता

□

आइनें

पथभ्रष्ट हुये
सब लौट गये
अपने अपने अँधेरों में

# इस गुस्से को क्या करें

बहुत गुस्सा आ रहा है मुझे
इस गुस्से का क्या किया जाय ?

रोज पाखंड की दीवार, एक मीटर बढ़ जाती है
आदमी को जीवित दफनाकर
अपनी नींव में
रोज एक के बाद एक
दरिंदे
शब्दों की झाड़ियों से बाहर निकल,
मेरे गले में फाँसी के फंदे कसते हुए फरमाते हैं
"चुपचाप
इस खाली कागज पर दस्तखत कर लो
हथियार तो हमने
तुम तक पहुँचने ही नहीं दिये
बेतरतीब पत्थर सिर पर मारकर
आत्महत्या कर लो

या

अपनी जान हमे दे दो हम उसे पीसकर मिट्टी कर देंगे
फिर न तुम्हें भय होगा और हम निभय होगे

उल्लू के पट्ठे,
अपने को बुद्धिमान मत समझ सारे बुद्धिमान लोग दंडित हैं
काले पानी के जेलखानो में
या साइबेरिया के यातना शिविरो मे

काले पानी के जेलखानो में
या यातना शिविरो में
बार बार अपने सूजते और सूखनेवाले चेहरे को देख

सोच,
समझ !

हम तुम्हें वरण की स्वतत्रता देते ह
'जाते हैं आज [illegible] वापस आयेंगे'

वरण की स्वतन्त्रता के इस आग्रह पर
मुझे और अधिक गुस्सा आ रहा ह, इस गुस्से का क्या किया जाय ?

## कंधों में धँसा हुआ शहर

मेरी टाँगें निकाल कर मुझे बैसाखियाँ दे दी गयी हैं
और कंधों में खोद-खोद कर उनमें एक शहर रख दिया गया है
गलियों के रास्ते और राजमार्ग, यातायात के शोरगुल के साथ बहते हैं मेरे खून के रेले में
झुरियाँ एड़ियों से जाँघों तक रस्से-सी कसकर लिपटी हैं
हाथ खींच-खींच कर लम्बे कर दिये गये हैं
कमरे छोटे छोटे और बौने

हाथ ऊपर उठाते ही कमरे दीवारों से टकराकर छत से चिपक जाते हैं
एक झटके साथ आ जाते हैं युद्ध में युद्ध ही युद्ध
और मेरी पराजय में पराजय ही पराजय गुणाकार होती हुई

क्योंकि मैं, आजीवन नजरबन्द होता हूँ उसकी जिम्मेदारियो का

मैं उसके तमाम सुखो की रचना मे रोज रोज,

कान पकड पकड कर कूदता रहता हूँ अपने भीतर पडी दरारो मे

शहर जिसकी नीव में कन्धो में पडी है, मैं हर बार झटक देना चाहता हूँ

लेकिन

वह एक छलाग लगाकर मेरे कन्धो को और अधिक खोदता हुआ मुझ में धँस जाता है

## अवसाद

☐

उदास

उदास

है

मन

पुस्तको पर जमी धूल सा

## युग असत्य का

एक झूठ युग मे, असत्य से लदे फंदे हम रहते है
जिसका घोषणा पत्र है सत्यमेव जयते

हरेक जगह से, सत्य का पूरा शोषण करने के लिये
शोषण तक जल्दी से जल्दी पहुँचने के लिए
हम एक राजमार्ग ले आये है
इसीलिए पल पल हरक पल
असुविधाजनक सत्यो को अपनी ही एक मरी हुई साँस
की तरह छोडते जाते है और प्रत्येक झूठ मे से
आराम से गुजर जाते है
सत्यमेव जयते की 'नमप्लेट', अपनी ललाट पर लगाये हुये

असत्य के इस औद्योगिक युग मे, सत्यमेव जयते ही
एक ऐसा सुनियोजित कारखाना है
जिसमे
असत्या का उत्पादन, इतना अधिक होता है
कि मुझ तक, आप तक, सब तक, पहुँच जाता है

## चुन लेना है मार्ग

चुन लेना है मार्ग
नही तो
जीवन
साइकिल के पहिये की तरह
घूमता घूमता
चुक जायेगा एक दिन
अपनी गति में

वस्तुओ को लाने, उठाने, सजाने,
और अन्त में
उनकी शवयात्राओ में शामिल
हो जाने से
तुम्हारा अकेलापन कम तो नही होता

चुन लेना है माग
नही तो
समय के हाथ में
अपनी गदन देने के सिवाय
कुछ भी नही बचेगा एक दिन ।

देखो
जरा ध्यान से देखो
तुम्हारी गर्दन पर
तुम्हारी हत्या के लिए

तुम्हारा और उनका एक
मिला जुला हाथ पड़ा है बरसों बरसों से
इसी हाथ को
अपना अस्तित्व भेजकर
ये दूसरों की दी हुई बसाखियाँ फेंककर
अपने पैरों से
रास्ता बनाते हुए चलो

नहीं तो
पैरों की ये बसाखियाँ
हाथ मिला मिलाकर एक होती जायेंगी
फिर मोटी हो हो कर
एक हो जायेंगी

और तुम बिना पेड़ बने ही
ठूँठ बन जाओगे एक दिन

## समय, घड़ी में

□

मैं अनन्त था

नहीं,
बल्कि अनन्तातीत था
लेकिन

जब कैद हुआ
मुझे भी
घड़ी में

चलना पड़ा
रुक रुक कर चलना पड़ा

## दीये बुझाने के बाद भी

[चंदनबाला जिसके हाथो तीर्थंकर महावीर ने पाँच महीने पच्चीस दिनो के उपवास के बाद भोजन ग्रहण किया चंदन बाला की माँ, जिसने, पीछा करते हुए क्रूर सैनिको के बलात्कार से बचने के लिए अपनी जीभ चबाचबाकर प्राण दे दिये थे ]

दीये,
बुझा दिये गये है
हाथ को हाथ न सूझे
ऐसा
अँधेरा है

मिट्टी के दीयो में
जलने के लिए
जो तेल होता है
अब वह कहाँ है ?

शहर म यह जो रोशनी है
वह तो, पावर हाउस की ह

हमारे पास जो
रोशनी थी
अब वह कहाँ ह ?
कहाँ रख दी ह ?

घर में, यह क्या उठा लाये ?
साँपो क डर ने
घेर लिया है हम सबको

कायर और असहाय होने का
यह कैसा समय है ?
दाँतो के बीच
जीभ
दबाकर
मर जाने की इच्छा
होती है, चदनबाला की माँ की तरह

ठीक कहते हो !
हम सब
मनुष्य होना
खोते जा रहे है
धीरे-धीरे
पत्थर, पत्थर, पत्थर
हो रहे हैं
स्वतन्त्रता, खो रहे हैं
लेकिन, मनुष्य का
पत्थर में पलट जाना,
नियति है
ऐसा मैं नही मानता

कैसा भी वक्त हो
कैसा भी शासन हो
कैसा भी जुल्म हो
जान देने का
आखिरी निणय
मनुष्य के हाथ में ह

## जगल



कोई भी जगल
उतना डरावना नही ह,
जितना
हम डर रहे हैं



अपने स्वभाव से खारिज हो जाने को देखने की कविता भी है क्योंकि अपने स्वभाव से खारिज हो जाना हरेक प्रकार हिंसा (विश्व युद्ध तक) और शोषण चक्रों तथा दूसरे को दी जानेवाली यातनाओ का जन्म होता है यह दूसरे का भाव ही सबसे बडा यातना शिविर है और इस यातना शिविर को, सभ्यता, प्रगति, विकास, दूसरे की भलाई, दल प्रतिबद्धता, न्याय, समता, लोकतन्त्र, देशभक्ति, समाजवाद, धर्म या किसी विचारधारा के सुहाने नाम मे खडा करना, मनुष्य का अपने प्रति ही नही इस सृष्टि के अन्य प्राणियो के प्रति भी इस शताब्दी का सबसे बडा अपराध है जिसमें हम, आप और कुन्तलकुमार भी शामिल है इस अपने ही किये अपराध और अत्याचार को कहना कवि के शब्दो में अपनी फजीहत करवाना है, अपने आप पर कोडे बरसाना है इतना कहने के बाद अब यह कहने की आवश्यकता नही है कि वे न तो समर्थन के कवि है, न विरोध के, न पक्ष के कवि हैं, न प्रतिपक्ष के जिसे इस सकलन की कविताओ से समझा जा सकता है उनका तो कहना है कि वे तो उन कविताओ के भी कवि नही है जो उन्होने लिखी हैं क्योकि कविता परिग्रह की चतुराई नही है बल्कि अपरिग्रह की सरलता और सहजता है

यह नन्दकिशोर मित्तल ने कहा, लिखा और आपने पढा



पृथ्वीनाथ शास्त्री सोहन शर्मा
नन्दकिशोर मित्तल चन्द्रकान्त वाडिवडेकर
विजयकुमार सुरेश जन अक्षय जैन
देवेन्द्र जैन कल्पना सुन्दर और ससद

आप सबके सहयोग का ऋण स्वीकार और आभार